INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 11, November 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

लोक साहित्य में शोध की संभावना, परंपरा एवं प्रासंगिकता

हिमाचल प्रदेश के विशेष संदर्भ में

डॉ. श्याम सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय बरोटीवाला, जिला सोलन (हि.प्र.)
दूरभाष: 9816201449 | ई-मेल: drshyamsingh.sml@gmail.com

सार (Abstract): प्रस्तुत शोध पत्र हिमाचल प्रदेश के लोक साहित्य की परंपरा, उसमें शोध की अपार संभावनाओं और वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण एवं विवेचन करता है। हिमाचल का लोक साहित्य केवल लोकगीत और लोककथा नहीं है, बल्कि यह पहाड़ी जीवन-दर्शन, पर्यावरण-चेतना और सामाजिक मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है। तकनीकीकरण और पलायन के कारण यह मौखिक परंपरा संकट में है। अतः इसका वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और अकादमिक शोध आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, जो एक चिंतन का विषय है।

मुख्य शब्द: हिमाचली लोक साहित्य, मौखिक परंपरा, शोध संभावना, प्रासंगिकता एवं सार्थकता।

1. प्रस्तावना

लोक साहित्य सामाजिक दर्पण है, जो लोक के कंठ में बसता है, पोथी में नहीं। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोक ही साहित्य का आदि स्रोत है। हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में, जहाँ लिपि देर से पहुँची, वहाँ पूरा इतिहास, भूगोल और संस्कृति लोक साहित्य में ही सुरक्षित है।

2. हिमाचल के लोक साहित्य की परंपरा

हिमाचल में लोक साहित्य की परंपरा मुख्यतः दो रूपों में जीवित है—

(क) मौखिक परंपरा: करियाला, बाँठड़ा, स्वांग, हार, लामण तथा छिंज का आख्यान इस परंपरा के प्रमुख रूप हैं।

(ख) अनुष्ठानिक परंपरा: जागरा, देव-स्तुति, जोत तथा छोकरू-नाटी के साथ गाई जाने वाली गाथाएँ इसके अंतर्गत आती हैं। शिमला के महासू देवता की गाथा या किन्नौर के जोमो की कथाएँ इसके उदाहरण हैं।

3. शोध की संभावनाएँ

(i) लुप्त होती विधाओं का दस्तावेजीकरण: शिमला और सिरमौर की 'ठोठा' लोकगाथा तथा चंबा की 'गद्दी' जनजाति के 'बुराह' गीतों का संकलन, संरक्षण और विश्लेषण शोध के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हो सकते हैं।

(ii) विषयगत शोध: हिमाचली लोकगीतों में पर्यावरण चेतना, लोक साहित्य में महिला अस्मिता तथा देव-परंपरा और लोक-कानून के संबंध जैसे विषयों पर गहन अध्ययन की संभावनाएँ हैं।

(iii) तकनीकी शोध: लोक साहित्य के दस्तावेजीकरण की इंडेक्सिंग, ऑडियो-वीडियो आर्काइव का निर्माण तथा GIS मैपिंग के माध्यम से विधाओं, स्थलों और परंपराओं का व्यवस्थित अभिलेखन किया जा सकता है।

4. वर्तमान में प्रासंगिकता

हिमाचली लोक साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता अनेक स्तरों पर दिखाई देती है।

1. NEP 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा: लोक साहित्य में निहित स्थानीय ज्ञान, जीवन-दृष्टि और सांस्कृतिक अनुभव भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन एवं शिक्षण को समृद्ध कर सकते हैं।

2. पलायन और पहचान का संकट: ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन के कारण मौखिक परंपराओं के संवाहक और पारंपरिक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश बदल रहे हैं। ऐसे में लोक साहित्य का संकलन सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

3. पर्यटन और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था: लोकगीत, लोकनाट्य, देव-परंपराएँ और स्थानीय कथाएँ हिमाचल की सांस्कृतिक विशिष्टता को सामने लाती हैं तथा सांस्कृतिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी आधार प्रदान कर सकती हैं।

5. निष्कर्ष

हिमाचल का लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि हिमालयी जीवन का विश्वकोश है। यदि आज सोलन, शिमला, किन्नौर, सिरमौर एवं जनजातीय क्षेत्रों के गाँवों में जाकर इसका वैज्ञानिक सर्वेक्षण नहीं किया गया, तो आने वाले बीस वर्षों

में हमारे पास इन परंपराओं के केवल नाम शेष रह जाने का खतरा है। इसलिए लोक साहित्य का क्षेत्रीय सर्वेक्षण, प्रामाणिक दस्तावेजीकरण, संरक्षण और अकादमिक अध्ययन समय की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय, कृष्णदेव — लोक साहित्य की भूमिका।
2. शर्मा, गौतम — हिमाचल के लोकगीत।
3. ठाकुर, मौलूराम — हिमाचली लोक साहित्य।
4. अवस्थी, राजेंद्र — जंगल के फूल।
5. नेगी, डॉ. के. एस. — किन्नौर की लोक कथायें।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.